Early Mediaeval Europe (लगभग 5वीं से 10वीं शताब्दी) की राजनीतिक स्थिति को समझने के लिए रोमन साम्राज्य के पतन के बाद बने सत्ता-रिक्त स्थान और नई शक्तियों के उदय को ध्यान में रखना ज़रूरी है। संक्षेप में कहें तो यह दौर राजनीतिक विखंडन, अस्थिरता और स्थानीय सत्ता के उभार का था।

1. रोमन साम्राज्य का पतन और सत्ता का विखंडन

476 ई. में पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन के साथ ही यूरोप में
केन्द्रीय शासन व्यवस्था टूट गई
सड़कों, प्रशासन, कर-प्रणाली और स्थायी सेना जैसी संस्थाएँ कमजोर हो गईं
परिणामस्वरूप एकीकृत राज्य के स्थान पर अनेक छोटे-छोटे राजनीतिक इकाइयाँ उभर आईं।

2. जर्मनिक जनजातियों का उदय

रोमन सत्ता के पतन के बाद विभिन्न जर्मनिक जनजातियों ने अपने-अपने राज्य स्थापित किए, जैसे—
फ्रैंक्स (आधुनिक फ्रांस क्षेत्र)
विसीगोथ्स (स्पेन)
ओस्ट्रोगोथ्स (इटली)
एंग्लो-सैक्सन्स (इंग्लैंड)
इन राज्यों की राजनीति
व्यक्तिगत निष्ठा (personal loyalty) पर आधारित थी
लिखित कानून की जगह परंपरा और रीति-रिवाज प्रभावी थे

3. सामंतवाद (Feudalism) का उदय

राजनीतिक अस्थिरता और बाहरी आक्रमणों (वाइकिंग, हंगेरियन, मुस्लिम आक्रमण) के कारण
लोगों ने स्थानीय शक्तिशाली सामंतों की शरण ली
राजा नाममात्र का शासक रह गया
इस व्यवस्था में—
सत्ता का विकेंद्रीकरण हुआ
भूमि के बदले सैन्य सेवा ली जाने लगी
स्थानीय प्रभु (Lords) वास्तविक शासक बन गए

4. चर्च की राजनीतिक भूमिका

इस काल में ईसाई चर्च सबसे संगठित और स्थिर संस्था थी।
चर्च ने राजनीतिक वैधता प्रदान की
पोप और बिशप कई बार राजाओं से भी अधिक प्रभावशाली थे
शिक्षा, कानून और नैतिकता पर चर्च का नियंत्रण था
कई क्षेत्रों में चर्च और राज्य की सीमाएँ धुंधली हो गईं।

5. शारलेमेन का प्रयास और अस्थायी एकता

8वीं–9वीं शताब्दी में शारलेमेन (Charlemagne) ने
एक विशाल साम्राज्य स्थापित किया
रोमन परंपरा को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया
लेकिन उसके बाद
साम्राज्य का विभाजन हुआ
राजनीतिक एकता फिर टूट गई
यह दर्शाता है कि Early Medieval Europe में स्थायी केन्द्रीय सत्ता स्थापित नहीं हो सकी।

6. निरंतर युद्ध और असुरक्षा

इस पूरे दौर में
सीमाएँ अस्थिर थीं
उत्तराधिकार के झगड़े आम थे
शासक शक्तिशाली सेना के बजाय व्यक्तिगत निष्ठा पर निर्भर थे

राजनीति का चरित्र स्थानीय, सैन्य और असुरक्षित था।
निष्कर्ष
Early Mediaeval Europe की राजनीतिक स्थिति की मुख्य विशेषताएँ थीं—
केन्द्रीय सत्ता का पतन
राजनीतिक विखंडन
सामंतवादी व्यवस्था का विकास
चर्च का बढ़ता राजनीतिक प्रभाव
अस्थायी साम्राज्य और स्थायी अस्थिरता
इसे सही मायनों में राजनीतिक संक्रमण और पुनर्गठन का युग कहा जा सकता है।